View metadata, citation and similar papers at core.ac.uk

brought to you by CORE

provided by CMFRI Digital Repository

भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम के तहत संरक्षित उपास्थिमीन प्रजातियों का विवरण

पी. यू. ज़करिया[1], शोभा जो किज़ाकूडन[1], के. एस. शोभना[1], पी. पी. मनोजकुमार[1], सुजिता थोमस[1], रेखा जे. नायर[1], टी. एम. नज्मुद्दीन[1], मुक्ता मेनोन[1], जी. बी. पुरुषोत्तमा[1], स्वातीप्रियंका सेन[1], संतोष बी. पिल्लै[2], रंजित एल. [3], आर. शरवणन[3] और के. एस. एस. एम. यूसफ[1]

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोची, केरल

लेखक से संपर्क: zachariapu@gmail.com

परिचय

उपास्थिमीन एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक समुद्री संपदा है जिस में सुरा, स्केट और शंकुश मछलियाँ शामिल है। भारत में उपास्थिमीन की प्रमुख लक्षित मात्स्यिकी होती है। इस संपदा की दुनिया भर में बहुत माँग है और प्रतिदिन इसकी महँगाई बढती जा रही है। परंतु आज विवेकहीन उपयोजन से इस बहुमूल्य संपदा पर हानिकारक प्रभाव हो रही है। समुद्री खाद्य श्रृंखला में उपास्थिमीन उच्च स्थान पर है और इनकी वर्धित पकड से पारिस्थितिक तंत्र की संरचना और प्रकार्य हानिकारक रूप से बदल जा सकती हैं। उपास्थिमीन के कई प्रजाति लंबी उम्र और बडे आकार के होते हैं। इनकी वृद्धि और परिपक्वता बहुत धीमी गति से होती है और इनकी जनन क्षमता बहुत कम है। इन प्रतिकूल लक्षणों के कारण अतिशोषण के प्रति इनकी सुभेद्यता बहुत अधिक है। अब दुनिया भर में इनकी संरक्षण की आवश्यकता का बढती जागरूकता फैल चुकी है और भारत सहित कई राज्यों ने उपास्थिमीन संपदाओं की विवेकहीन मात्स्यिकी और व्यापार के प्रति गंभीर दृष्टि कोण अपनाए हैं।

प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ (आई. यू. सी. एन) वैश्विक संगठन है जो चपेट प्रजातियों के संरक्षण के लिए काम करता है। लुप्तप्राय प्रजातियों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार पर कन्वेंशन (सी. आई. टी. ई. एस.) उपास्थिमीन सहित कई लुप्तप्राय प्रजातियों के व्यापार और अति मत्स्यन नियंत्रित करता है। प्रवासी प्रजाति पर कन्वेंशन (सी. एम. एस) भी सुरा संरक्षण में शामिल है। भारत के वन्य जीवन प्राधिकारी भारतीय वन्य जीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 के प्रवर्तन के माध्यम से भारत में लुप्तप्राय प्रजातियों के संरक्षण के

प्रयत्न करने वाला गवर्निंग स्थानीय निकाय है। भारत में उपास्थिमीन की दस प्रजाति जिनमें सुरा मछलियों की 4 प्रजाति, शंकुशों की दो प्रजाति और गिटार मछली एवं स्केट की चार प्रजाति डबल्यू. पी. ए., 1972 की अनुसूची 1 के तहत संरक्षित नामित किए गए हैं। यह लेख संरक्षित प्रजाति का एक संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करता है।

संरक्षित सुरा मछलियाँ

कारकारिनस हेमियोडोन (पोंडिचेरी सुरा) - एक अत्यंत विरल प्रजाति जो भारत के उपतट जलक्षेत्र में पाया जाता है। इसकी अधिकतम लंबाई 200 से. मी. है। शरीर की आकार मज़बूत और थूथन नुकीला है। इसका रंग ऊपर स्लेटी और नीचे सफेद है, पर स्कंध पख और पुच्छ पख के नोख काला है। व्यावसायिक और कारीगरी मात्स्यिकी से की गई गंभीर अतिशोषण द्वारा इस प्रजाति का अवक्षय हो चुका है।

ग्लैफिस गेंजटिकस (गेंजस सुरा) - एक यथार्थ नदीय शार्क जो गंगा नदी में पाया जाता है। जन्म के समय इसकी लंबाई 56-61 से. मी. और अधिकतम लंबाई 204 से. मी. है। इसका शरीर गठीला है और थूथन मोटे तौर पर गोल है। इसका रंग, बिना कोई नमूदार निशान के, सामान रूप से स्लेटी या भूरा-सा है। गंगा नदी में सामान्य तौर पर पाई जाने वाली दूसरी प्रजाति *कारकारिनस ल्यूकास* के साथ इसकी पहचान करने में अक्सर गलती होती है। इसके वितरण सीमा में अति मत्स्यन और वास अवनति की वजह से इस प्रजाति अब विलुप्त होने के कगार पर है।

ग्लैफिस ग्लैफिस (स्पीयर दाँत सुरा) - अत्यंत विरल प्रजाति जो ज़्यादातर उत्तरी ऑस्ट्रेलिया और न्यू गिनी उष्णकटिबंधीय नदियों के मैंग्रोव क्षेत्रों में निवसित है। यह हाल में भारतीय जल से दर्ज नहीं किया गया है। वाणिज्यिक एवं मनोरंजिक मात्स्यिकी में आनुषंगिक कब्जा और वास गिरावट के कारण यह प्रजाति खतरे में है और .आई. यू. सी. एन. द्वारा यह एक संकट ग्रस्त प्रजाति नामित किया गया है।

रिंकोडोन टाईपस (तिमिंगल सुरा) - भारत के उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों, प्रवाल अड़लें और झाड़ियों के समुद्र तालों में पया जाता है। इन विशाल प्राणियाँ मेक्रो शैवाल, प्लवक, क्रिल्ल, और छोटे स्क्विड़ खाते हैं। यह एक अण्डजरायुज मछली है। यह 70 से 100 साल तक जीते हैं। इसके गंभीर आकार के बावजूद यह एक सज्जन प्राणी है जो कोई खास रूप से खतरनाक नहीं है। लक्षित मात्स्यिकी की वजह से दुनिया भर इसकी आबादी में बड़े पैमाने पर गिरावट हुई है। भारत में सबसे ज़्यादा तिमिंगल सुरा की मात्स्यिकी गुजरात के तट पर नब्बे के दशक में हुआ था।

संरक्षित शंकुश

हिमान्ट्यूरा फ्लूवियाटिलिस (गेंजस दंश शंकुश) - यह प्रजाति गंगा नदी और समीपर्वती बंगाल की खाड़ी के समुद्री पानी में पाया जाता है। चेन्नई तट के उथले पानी में 37-55 मी. की गहराई में भी इसकी मौजूदगी प्रतिवेदित किया गया है। यह एक अण्डजरायुज मछली है। इसकी अधिकतम लंबाई 140 से. मी. है। इसके स्कंध पख की चक्रिका अंड़ाकार है और थूथान लंबा है। इसका रंग ऊपर काला-सा और नीचे हल्का है। पार्श्व चक्रिका की हाशिए पर विस्तृत गहरी स्लेटी पट्टियाँ है। इसके वितरण सीमा के भीतर यह प्रजाति अब अति मत्स्यन और वास अवनति के कारण विलुप्त होने की खतरें में है।

यूरोजिम्नस एस्पेर्रिमस (शल्यकी शंकुश) - यह शंकुश भारत के मुम्बई से लेकर चेन्नई तक की दक्षिणी तट में पाया जाता है। ये रेतीले मैदान, प्रवाल मलबे और समुद्री घास के मैदान में निवसित है और अक्सर 1-30 मी. तक की गहरी खाड़ी में प्रवेश करते है। इनके शरीर में तेज़ कांटे है जिससे मनुष्य घायल हो सकते हैं। वर्तमान में शल्यकी शंकुशें कभी-कभी आनाय जाल और पुलिन संपाशक में आकस्मिक पकड़ के रूप में मिलते हैं। अनियमित शोषण के कारण बंगाल की खाड़ी में इनकी आबादी में काफी गिरावट हुई है और वर्तमान

में शल्की शंकुशें कभी-कभी आनाय जाल और पुलिन संपाशक में आकस्मिक पकड़ के रूप में ही मिलते हैं।

संरक्षित गिटार एवं स्केट मछलियाँ

रिंकोबाटस जिड्डंसिस (महा गिटार मीन) - यह प्रजाति उपतट और उथ्थला ज्वार नद मुखों में 2-50 मे. की गहराई तक और तटीय झाड़ी या प्रवाल झाड़ी के पास रेतीले मैदानों में पाया जाता है। इसका अधिकतम लंबाई 310 से. मे. और अधिकतम वजन 220 की. है। यह एक अण्डजरायुज मछली है और एक मादा मछली एक साथ दस बच्चों को पैदा कर सकती है। महा गिटार मीन मनुष्य के लिए हानिरहित हैं। पखों के लिये अनियमित शोषण इसके आबादी में गिरावट का कारण बन चुका है। धीमी विकास दर और कम उपजाऊपन के कारण यह प्रजाति अंधाधुंध शोषण के प्रति अत्यधिक बेहत सुभेद्य है।

प्रिस्टिस ज़िस्त्रोन (हरा सॉ मछली) - एक संकट ग्रस्त प्रजाति जो अफ्रीका, एदन की खाड़ी और लाल सागर के पूर्वी तट से भारत, मलेशिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया और उत्तरी ऑस्ट्रेलिया तक फैली हुई है। ईसकी जीवन चक्र के बारे में ज़्यादा जानकारी उपलब्ध नहीं है। इसका अधिकतम लंबाई 730 से. मे. है। इसका पुनरुत्पादन दर बहुत धीमी गति की है और इस वजह से मत्स्यन मत्य्र्ता के प्रति इस प्रजाति का प्रत्यास्थता बहुत कम है।

प्रिस्टिस माईक्रोडोन (बड़ा दाँत सॉ मछली) - यह प्रजाति भारत के उथ्थला तटीय जलों में और गंगा एवं ब्रह्मपुत्र नदियों में पाया जाता है। इसका अधिकतम लंबाई 700 से. मी. है. यह एक भारी शरीर वाले अण्डजरायुज मछली है। इसका आरा छोटा और चौड़ा है, जिसमें 14-22 बड़े दाँत हैं। इस प्रजाति गंभीर गिरावट का सामना कर रहा है क्योंकि अति मत्स्यन और निवास स्थल के नष्ट की प्रति इनकी सुभेद्यता बहुत ज़्यादा है।

अनोक्सीप्रिस्टिस कस्पिडेटा (छुरी दाँत सॉ मछली) - ईस प्रजाति का वितरण उत्तरी अरब खाड़ी से ओस्ट्रेलिया और उत्तरी जापान तक है। यह तटवर्ती, ज्वार-मुहानीय और अपतटीय जलों में 40 मी. की गहराई में पाया जाता है। इसका अधिकतम लंबाई 470 से. मी. है. इसका शरीर आम तौर पर सुरा की तरह है लेकिन इसकी सबसे स्पष्ट सुविधा इसका चपटे सिर है जो अस्थिमय है और एक ब्लेड की तरह दीर्घित है। इसकी थूथन पर 18-22 दांत की जोड़ी है। अति मत्स्यन और निवास स्थल के नष्ठ की कारण से यह गंभीर गिरावट का सामना कर रहा और आई. यू. सी. एन. द्वारा यह एक संकट ग्रस्त प्रजाति नामित किया गया है।

किसी भी रूप में इन प्रजातियों के शोषण और व्यापार पर प्रतिबंध लगाया गया है और दंडनीय अपराधों के रूप में घोषित किया गया है।